मन्नू भण्डारी के " आपका बंटी " में चित्रित बाल - मनोविज्ञान

Child Psychology as depicted in Mannu Bandari's Novel " Aapka Bundi ''

(MRP(H)-1967/11-12/KLKE029/UGC SWRO dated 10/07/2012)

Dr. Sheeba Sarath .S

Assistant Professor In Hindi

University College, Thiruvananthapuram, Kerala

प्राक्कथन

स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कथा साहित्य में श्रीमती. मन्नू भंडारी का स्थान मनोवैज्ञानिक एवं संवेदनशील लेखिकाओं में है | उन्होंने समसामायिकता और आधुनिकता से गतिशील संरचनात्मक परिवर्तन को अपनी अनुभूती एंव अभिवव्यंजना के स्तर पर आधुनिक भावबोध के साथ कथा साहित्य में प्रस्तुत की है | "आपका बंटी'' उनकी संवेदनशील , भावप्रधान उपन्यास है |

प्रस्तुत लघु परियोजना से संबन्धित यह शोध विषय चार अध्यायों में विभाजित हैं | पहला अध्याय- मन्नू भंडारी : व्यक्ति एव कृति है | दूसरा अध्याय- बाल - मनोविज्ञान : एक सैद्धान्तिक चर्चा है |

तीसरे अध्याय में "आपका बंटी" उपन्यास के पात्र एंव उनका चरित्र -चित्रण है | हरेक मुख्य पात्र को
इसमें चरित्र -चित्रण के द्वारा प्रस्तुत किया है |

चौथे अध्याय में शोथ विषय की केंद्रीय समस्या (बाल- मनोविज्ञान) से संबन्धित विविध मुद्दो पर विश्लेशण किया गया है | उपसंहार में इन चार अध्यायों में अभिव्यक्त विचारों का सार संक्षिप्त दिया गया है |

इस शोध कार्य संबन्धी सामग्री संकलन में मुझे कोई कठिनाई नही हुयी | विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से जो अनुदान प्राप्त हुआ उससे ज़रुरत कि किताबें खरीदी गयीं | यूनिवेर्सिटी कालेज के पुस्तकालय , कार्यवट्टम हिंदी विभाग के पुस्तकालय , कोच्चिन एंव कालिकट के हिंदी विभाग के पुस्तकालय से मुझे कई पुस्तकें प्राप्त हुयी | पुस्तक संचयन एव सामग्री संकलन हेतु मुझे दिल्ली जाने का सौभाग्य मिला | वानी प्रकाशन , अमन प्रकाशन , माया प्रकाशन की पुस्तकें मुझे मिली | उनके प्रती आभार हूँ |

यूनिवेर्सिटी कालेज के हिंदी विभाग के कुछ प्रध्यापक बंधुओं से मुझे जो सहायता प्राप्त हुयी हैं उनके लिये मैं सदैव कृतज्ञ हूँ | सदा प्रेरणा एंव प्रोत्साहन देनेवाले मेरे परिवार के बंधुजनों विशेषकर मेरे पति श्री प्रतापचंद्रन.के जि.और कम्प्यूटर पर टंकण कार्य कर मेरी मदद किये मेरे प्यारे बेटे स्वरूप कृष्णन , छह साल की छोटी बेटी श्रेयाकृष्णा के प्रति मैं आभारी हूँ |

ये लघु शोध प्रबंध मैं सुधी एव सह्रदय् पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर रही हूँ |

सविनय

डा षीबा शरत.एस

तिरुवनंतपुरम

उपसंहार

मन्नूजी ने अपने इस मौलिक उपन्यास “आपका बंटी” में बाल- विकास की प्रत्येक स्थिति , विशेषता और संवेद्ना को कुशलता से प्रस्तुत की है | उन्होने बंटी , शकुन , अजय तीनों की मानसिकता को चित्रित करते हुये बंटी के जीवन की अनिश्चितता और उसकी ट्रेजेडी के अहसास को बडे मार्मिक ढंग से चित्रित की है | इस उपन्यास में उठायी गयी समस्या टूटते वैवाहिक संबंधों में संवेद्नशील बच्चे की दयनीय स्थिति है |

माता-पिता की समस्याओं में पिसती हुयी संतान को जिन मनोग्रन्थियों का शिकार हो जाना पड़ता है यह सब बंटी में मौजूद है | माता-पिता की अहम की टकराहट में आहत बंटी दोनों परिवारों में फालतू बच्चा बन जाता है| बंटी सामान्य बालक नहीं है उनमें इगो की प्रबलता है , अपने आपको उपेक्षित और तिरस्कृत अनुभव करनेवाला बालक उनका ध्यान आकृष्ट करने के लिये अनेक प्रकार के आचरण करने लगता है |

यहाँ बंटी के नज़र मे डॉक्टर जोशी और विमाता मीरा दोनों घृणा के पात्र हैं | वह समझता है कि अपने ममी-पापा को पृथ्कत्व का कारण ये दोनों हैं | इसलिए वह इन दोनों को ममी-पापा के रूप में स्वीकार नहीं करते | वह न डॉक्टर के घर अटजस्ट होता है न अजय के घर में | ममी के पुनर्विवाह के बाद बंटी उस घर में उपेक्षित और तिरस्कृत समझता है | इडिपस ग्रंथि के शिकार होने के कारण डॉक्टर जोशी के प्रति ममी का आकर्षण उसे पीडा देता है , वहाँ कलकत्ता गया तो वहाँ अपने पापा को प्यार करने के लिये नया बेटा छोटा चीनू है | मीरा और अजय उसकी ओर अधिक ध्यान देता है | बंटी के साथ बिताने के लिये किसी के पास वक़्त नहीं है | बंटी अपने ममी-पापा पर एकाधिकार स्थापित करना चाहता है | ममी-पापा एक साथ बातें करें या बैठें तो बंटी में एक अनिर्वचनीय आनंद होता है | सुरक्षा बोध होता है , शायद ममी-पापा की बात तलाक के संबंध मे क्यों न हो |

जीवन में किसी एक व्यक्ति के प्रति ईष्या , द्वेष और प्रतिशोध का भाव बच्चे को विद्रोही बनाता है | यही बात बंटी में हैं । इसलिये वह प्रतिशोध करने के लिये बन्दूक से ठाय- ठाय करता है , उपन्यास में कई स्थलों से यह विदित होता है कि शकुन अमि और जोत के कारण अपने प्रिय पुत्र बंटी की उपेक्षा करने के लिये मज़बूर हो जाती है | कलकत्ता आकर बंटी पापा से कहना चाहता है कि उसे वापस ममी के पास भेज दें | वह अपने ही स्कूल मे पढेगा , लेकिन सबकुछ बंटी के भीतर ही रह जाता है |इतनी हिम्मत ही नहीं जुटा पाता और उसके जीवन का नया अध्याय प्रारंभ हो जाता है | माता-पिता के जीवित होते हुये भी वह बिना माँ-बाप का संतान बन गया है | पिता की दूसरी शादि की बात उससे प्राय: अंत तक चिपायी जाती है | कलकत्ते में मीरा और चीनू को देखकर उसमें कोई प्रतिक्रिया नहीं होती | इसप्रकार मन्नूजी ने इस उपन्यास में शुरू से अंत तक बंटी की सूक्ष्म भावनाओं को सावधानी से बाहर लाया है |यह उपन्यास पढकर हमारा मन भी द्रवित हो जाता है | सच कहें तो यह उपन्यास मैं ने भारी दिल से पढी है | बंटी का चेहरा मुझे अपने बेटे जैसे लगता है | इसलिये मैं ने जल्दी बंटी को पहचाना , शकुन के पुर्विवाह की बात से मुझे उस औरत पर नफरत आ गयी | फूफी की बात का समर्थन मैं करती हूँ | इतने प्यारवाले बच्चे को छोडकर शकुन क्यों दूसरी शादि के लिये सहमत हुयी | ये घर में उसे बंटी नहीं अमि और जोत की खुशी में ज़्यादा ध्यान देना पडता है , अगर बंटी की भविब्य के लिये दूसरी शादि की तो क्या बंटी को वह मिल गया ? बेचारे बंटी माँ के शादि के बाद कहीं का न बना | इसका दोषी केवल शकुन है| बच्चे को एक विषादात्मक मनः स्थिति की ओर ले जानेवाली यहाँ उसकी माँ है |

मन्नूजी ने स्वार्थता के लिये बच्चे को विकल मनः-स्थिति की ओर जानेवली शिक्षित नारी का भी चित्रण यहाँ पर की है , बालमनोविज्ञान के सूक्ष्म तंन्तुओं को मन्नूजी ने बखूबी से यहाँ चित्रित किया है |

MINOR RESEARCH PROJECT

मन्नू भण्डारी के " आपका बंटी " में चित्रित बाल - मनोविज्ञान

Child Psychology as depicted in Mannu Bandari's Novel " Aapka Bundi ''